19 कुत्ते की कहानी

जब मेरा जन्म हुआ तो मेरी आँखें और कान बंद थे। इसलिए नहीं कह सकता कि बाजे-गाजे बजे, गाना-बजाना हुआ या नहीं। मुझे तो कुछ सुनाई न दिया। हाँ, जिस बिछावन पर मैं लेटा था, वह रूई की भाँति नर्म था। सर्दी जरा भी न लगती थी। मैं दिल में समझ रहा था, किसी बड़े घर में मेरा जन्म हुआ है, लेकिन जब आँखें खुलीं तो मैंने देखा कि एक भाड़ की राख में अपनी माता की छाती से चिपका हुआ पड़ा हूँ। हम चार भाई थे। तीन लाल थे। मैं काला था। उस पर सबसे छोटा और सबसे कमजोर।

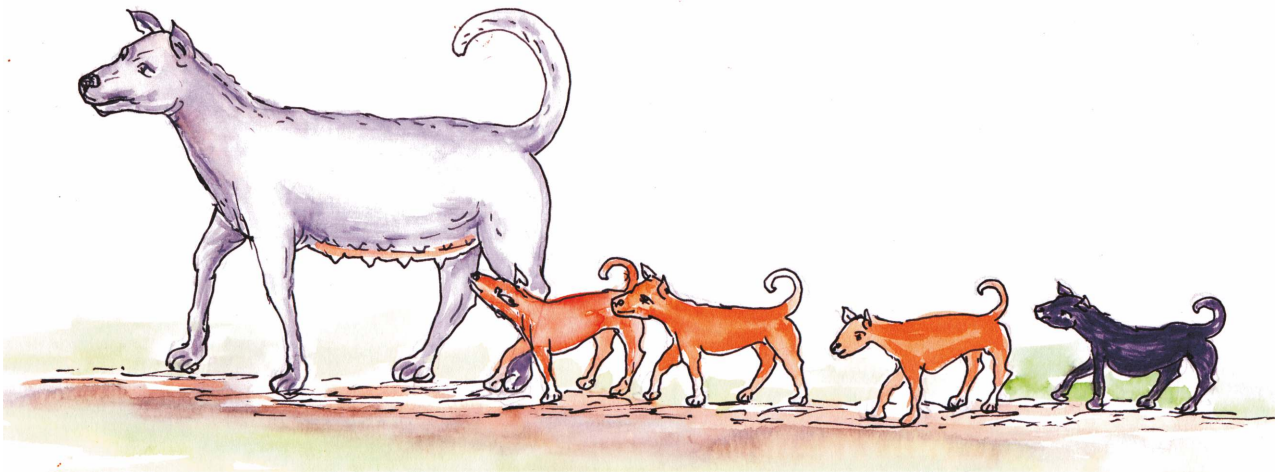

माता भी हमलोगों के पास कम ही रहती थीं। उन्हें खाने की टोह में इधर-उधर दौड़ना पड़ता था। वह रात-रात भर जागकर गाँव की रक्षा करती थी। क्या मजाल कि कोई अनजान आदमी गाँव में कदम रख सके। दूसरे गाँव के कुत्तों को तो वह दूर से ही देखकर भगा देती थीं। जब किसी खेत में कोई साँड़ घुसता तो उसे दूर तक भगा आतीं, मगर इतना सब कुछ करने पर भी कोई उन्हें खाने को न देता। बेचारी पेट की आग से जला करती थीं। उसपर हम लोगों की चिन्ता उन्हें और मार डालती थी। इसीलिए जब भूख सताती तो कभी-कभी वह चोरी से घरों में घुस जातीं और खाने की जो चीज मिल जाती, लेकर निकल भागती। उन्हें देखते ही लोग मारने दौड़ते और घरों के द्वार बंद कर लेते।

एक दिन बड़ी ठंड पड़ी। बादल छा गए और हवा चलने लगी। हमारे दो भाई ठंड न सह सके और मर गए। हम दो ही रह गए। माताजी बहुत रोईं, मगर क्या करतीं? गाँववालों को फिर भी उनपर दया न आई थी। आदमी इतने मतलबी और बेदर्द होते हैं, यह मैंने पहली बार जाना।

इधर हम दोनों भाई जरा बड़े हुए तो लड़कों ने हमसे खेलना शुरू किया। मैं बहुत खूबसूरत था। मुझे एक पंडितजी का लड़का पकड़ लाया। मैं पंडितजी के घर पलने लगा।

एक रात पंडितजी के घर के सभी लोग कहीं रिश्तेदारी में गए थे। घर पर मैं और पंडितजी ही थे। पंडितजी तो खर्राटे की नींद ले रहे थे, पर मुझे नींद कहाँ ? बार-बार घर का चक्कर लगाता रहा। चोरों ने समझा, आज सन्नाटा है। घर के नौकर को मिलाकर सारा भेद ले लिया था। मैं आहट पाकर पिछवाड़े गया तो देखा कि एक दरवाजा खुला हुआ है और कुछ आदमी वहाँ खड़े होकर चौकन्नी आँखों से इधर-उधर देखते हुए धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं। थोड़ी देर में देखा, तो कोई भीतर से थाली-लोटा, संदूक वगैरह निकाल-निकालकर बाहर के आदमियों को दे रहा है। अब तो सब बातें समझ में आ गईं। मैं बड़े जोरों से भौंकने लगा। इस पर चोरों ने मुझ पर ढेले फेंकने शुरू किए, पर मुझे उन ढेलों की चिन्ता न थी। स्वामी का घर लुटा जा रहा है, भला यह कैसे देखा जाता? दौड़ता हुआ बरामदे में पंडितजी के पास गया और उनकी चादर दाँतों से खींचने लगा। इस पर उन्होंने गुस्सा होकर मुझे दो-तीन लातें जमा दीं, पर मैं बाज नहीं आया। फिर चादर खींची और जोर-जोर से भौंकने लगा।

पंडितजी की नींद खुल गई। अब उनको किस तरह समझाऊँ कि तुम्हारा घर लूटा जा रहा है। बार-बार पिछवाड़े जाता और उनके सामने आकर जोरों से भौंकने लगता। मेरी चुस्ती से चोरों की हिम्मत न पड़ती थी कि वे सामान लेकर भाग निकलें।

सवेरा होने में थोड़ी कसर थी। इसलिए चोर सब माल-असबाब पासवाले गड्ढे में डुबोते जाते थे। उनकी मंशा यही थी कि दूसरी रात में सब माल-असबाब उठा ले जाएँगे।

मुझे बार-बार गुस्सा आता था कि पंडितजी की बुद्धि पर आज पत्थर क्यों पड़ गया है? वे मेरे इशारे को क्यों नहीं समझ पा रहे हैं। आखिर मुझे एक उपाय सूझा। पलंग के नीचे पंडितजी की लाठी पड़ी हुई थी। उसे मैंने मुँह में उठा लिया और पिछवाड़े की तरफ बढ़ा।

अब पंडितजी मेरा इशारा समझ गए। तुरन्त लाठी लेकर पिछवाड़े पहुँचे तो देखते हैं कि चोर माल-असबाब उठाए लिए जा रहे हैं। वे घबरा उठे। उनके मुँह से केवल इतना ही निकला, ''चोर! चोर!''

चोर का नाम सुनते ही ''पकड़ो! पकड़ो'' की आवाजें चारों ओर से आने लगीं। क्षण भर में गाँव के लोग लाठियाँ ले-लेकर इकट्ठे हो गए, मगर चोरों का पता नहीं था।

मैं भीड़ को चीरता हुआ पानी में कूद पड़ा और एकदम नीचे घुसकर नीचे तह तक पहुँच गया। संयोग से एक कटोरी मेरे मुँह में आ गई। उसे लेकर बाहर निकला तो मेरी बात सबकी समझ में आ गई। दो-चार आदमी पानी में कूद पड़े और थोड़ी देर में सब सामान मिल गया। पंडितजी इतने खुश हुए कि मुझे उठा-उठाकर छाती से लगाने लगे। सब यही कहते कि यह पूर्व-जन्म का कोई विद्वान रहा होगा। किसी पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस जन्म में आया है।

-प्रेमचन्द

शब्दार्थ

ममता	–	मोह , प्यार	**टोह**	–	थाह / खोज
मजाल	–	हिम्मत	**सताना**	–	परेशान करना
मतलबी	–	अपना काम निकालने वाला	**बेदर्द**	–	निर्दय
खूबसूरत	–	सुन्दर	**चौकन्ना**	–	सतर्क/सावधान
माल-असबाब	–	सामान	**प्रायश्चित**	–	फल भोगना

अभ्यास

1. आइए बातचीत करें –

(क) इस पाठ में आपको क्या अच्छा लगा और क्यों?

.....

(ख) इस पाठ में आपको कौन-सी बात बुरी लगी, और क्यों?

.....

(ग) कुत्ते का कौन सा गुण आपको सबसे ज्यादा अच्छा लगा ?

.....

2. अपनी समझ से बताइए –

(क) ''जब भूख सताती तो कभी-कभी वह चोरी से घरों में घुस जातीं और खाने की जो चीज मिल जाती, लेकर निकल भागती।'' आपकी नजर में कुत्ते की माँ कैसी थी ?

.....

(ख) कुत्ते को क्या करना चाहिए था कि पंडित जी उसका इशारा जल्दी समझ जाते?

.....

3. पाठ से बताइए –

(क) कुत्ते को क्यों लगा कि उसका जन्म किसी बड़े घर में हुआ है ?

.....

(ख) कुत्ते की माँ अपने बच्चे के पास क्यों नहीं रह पाती थी?

.....

(ग) कुत्ते की माँ गाँव के लिए क्या-क्या करती थी ?

.....

(घ) कुत्ता कैसे पंडितजी के घर पहुँचा ?

.....

(ङ) पंडितजी के घर में ही चोर क्यों घुसे ?

.....

(च) कुत्ते के भौंकने का क्या कारण था ?

.....

(छ) पंडितजी कुत्ते को उठा-उठाकर छाती से क्यों लगा रहे थे ?

.....

4. खाली स्थानों को भरें-

(भीड़, हवा, कटोरी, पिछवाड़े, छाती, सामान)

(क) बादल छा गए और ..... चलने लगी।

(ख) मैं आहट पाकर ..... गया ।

(ग) मैं ..... को चीरता हुआ पानी में कूद पड़ा।

(घ) एक ..... मेरे मुँह में आ गई।

(ङ) थोड़ी देर में सब ..... मिल गया।

(च) मुझे उठा-उठाकर ..... से लगाने लगे।

5. पहले क्या हुआ? फिर क्या हुआ? उसी क्रम से नीचे लिखे वाक्यों के सामने 1, 2, 3, 4.....11 क्रम से लिखें-

घर पर मैं और पंडितजी ही थे। ☐

पंडितजी तुरन्त लाठी लेकर पिछवाड़े पहुँचे। ☐

मैं पानी में कूद पड़ा और एक कटोरी लेकर बाहर निकला। ☐

मेरा जन्म एक भाड़ की राख में हुआ । ☐

चोरों ने समझा, आज सन्नाटा है। ☐

थोड़ी देर में सब सामान मिल गया। ☐

पंडितजी ने मुझे दो-तीन लातें जमा दीं। ☐

मुझे एक पंडितजी का लड़का पकड़ लाया। ☐

चोर–सब भाग गए। ☐

मैंने पंडितजी की लाठी को मुँह में उठा लिया। ☐

मैं पंडितजी की चादर को दाँतों से खींचने लगा। ☐

6. नीचे लिखे वाक्यों में संख्या-सूचक शब्द जिसकी संख्या बता रहा है, उसे कोष्ठक में लिखें–

(क) हम चार भाई थे। .....

(ख) हमारे दो भाई ठंड न सह सके और मर गए। .....

(ग) एक दरवाजा खुला हुआ था। .....

(घ) पंडितजी ने मुझे दो–तीन लातें जमा दीं। .....

(ङ) आखिर मुझे एक उपाय सूझा। .....

(च) एक कटोरी मेरे मुँह में आ गई। .....

ये संख्या–सूचक शब्द संख्या (मात्रा या गिनती) रूप में विशेषता बताते हैं। अतः ये शब्द **"विशेषण"** के ही उदाहरण हैं।

7. कुत्ते में क्या-क्या विशेष गुण होते हैं ? इस कारण उनका उपयोग कहाँ-कहाँ होता है ?

गुण	उपयोग
.....	.....
.....	.....

8. कौन क्या है ?

(क) कुत्ता, गाय, बकरी, हाथी, हिरण — जानवर हैं।

(ख) पटना, दिल्ली, उदयपुर, दरभंगा — ..... हैं।

(ग) जलेबी, लड्डू, रसगुल्ला, पेड़ा — ..... हैं।

(घ) गंगा, कोशी, गंडक, बागमती — ..... हैं।

(ङ) बरगद, नारियल, पीपल, नीम — ..... हैं।

(च) गेहूँ, चावल, मकई, चना — ..... हैं।

(छ) कमीज, कुर्ता, साड़ी, धोती — ..... हैं।

(ज) पानी, चाय, दूध, शरबत — ..... हैं।

(झ) सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा — ..... हैं।

ये सभी **'संज्ञा'** हैं।

9. कौन कैसे बोलता है ?

(क) कुत्ता भौंकता है।

(ख) बकरी ..... है।

(ग) गाय ..... है।

(घ) घोड़ा ..... है।

(ङ) गधा ..... है।

(च) हाथी ..... है।

(छ) शेर ..... है।

(ज) मक्खी ..... है।

10. गिनती के अनुसार शब्द के रूप बदलिए –

(क) एक कुत्ता	दो	कुत्ते
(ख) एक लड़का	तीन	.....
(ग) एक लोटा	चार	.....
(घ) एक घोड़ा	पाँच	.....
(ङ) एक गधा	छः	.....

यदि किसी संज्ञा-शब्द से एक वस्तु का बोध होता है तो उसे **''एकवचन''** और यदि एक से अधिक का बोध होता है तो उसे **''बहुवचन''** कहते हैं।